4/7/20 विभाग - हिन्दी नाम डॉ० आराधना कुमारी Time-10:30 to 11:20 a.m.

Lecture-2

(6) उच्चारण भेद से किस प्रकार शब्दों के रूप कुछ के कुछ हो जाता है।
7 किस तरह शब्द कहीं अनुकरण के आधार पर तथा कहीं अन्य किसी प्रणाली से गढ़ लिया जाता है।
(8) भाषा विज्ञान ही समझाता है कि किस तरह से उपाध्याय शब्द घिसते-घिसते हो गया।
(9) किस तरह प्राप्त: ग्रंथि का पलाती या गांठ बन गया है।
(10) कैसे हिंस शब्द का परिवर्तन होकर सिंह बन गया है।
(11) किस तरह वनचौ का बंदर भी हो जाता है।
(12) किस तरह एक ही भद्र शब्द विकसित होकर भद्रा और भला शब्द आपस में कितने पृथक हो गये हैं।

इसी तरह शब्दों की राह को भाषा विज्ञान से ही प्राप्त करते हैं। और इसी से उनकी विकास धारा परिवर्तन आदि का संपूर्ण बोध होता है।

अर्थों के संबंध - भाषा विज्ञान से ही शब्दों विभिन्न अर्थों का बोध होता है, क्योंकि भाषा विज्ञान ही यह समझाता है कि किस तरह पीढ़ी परिवर्तन के साथ-साथ किसी शब्द के अर्थ में परिवर्तन हो जाते हैं। कैसे वातावरण के कारण एक ही शब्द विभिन्न अर्थों का द्योतक हो जाता है।
(1) कैसे शब्दों का अर्थ में विस्तार होता है।
(2) कैसे संकोच होता है।
(3) कैसे अर्थ कुछ से कुछ बदल जाते हैं।
(4) किस तरह कई तरह के अर्थ में उलझकर खो जाता है। अत:

भेद होता है। और वे पर्यायवाची शब्द भी अलग-अलग अर्थ के द्योतक होते हैं।
जैसे:- हकीम, वैद, डॉक्टर, कविराज आदि शब्द चिकित्सा के वाचक हैं। परन्तु इनमें परस्पर भेद होता है। ऐसा ही स्कूल, मदरसा, पाठशाला, कॉलेज, विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय आदि शब्द शिक्षा संस्था के द्योतक हैं किंतु इनमें परस्पर अंतर होता है।

अतः भाषा विज्ञान शब्दार्थ परिवर्तन दिशाएँ एवं उनके कारणों को संपूर्ण बोध कराने के कारण अत्यंत उपयुक्त होता है।

उपयोगिता भाषा विज्ञान न केवल भाषाओं का अध्ययन में ही उपयोगी है, बल्कि साहित्य के अध्ययन में भी अत्यंत उपयोगी होता है। क्योंकि साहित्य में प्रयुक्त विभिन्न भाषाओं का निर्माण एवं संरक्षण का संपूर्ण ज्ञान भाषा विज्ञान के द्वारा ही प्राप्त होता है और भाषा विज्ञान ही यह बताता है कि किस तरह कोई बोली धीरे-धीरे विभाषा का रूप ग्रहण करती है। कैसे वह लोक भाषा का रूप ग्रहण करते हुए साहित्य रचना एवं लोक व्यवहार में प्रयुक्त होता है। किस तरह प्रतिनिष्ठ भाषा बन कर उच्च-स्तरीय साहित्य की निर्माण में काम आने लगती है। भाषा विज्ञान ही साहित्य की अभिव्यक्ति संदर्भ एवं अभिव्यंजना कौशल को समझाने में सहायता पहुँचाता है। तथा भाषा विज्ञान से ही यह ज्ञात होता है कि किस प्रकार कोई भाषा विभिन्न शब्द रूपों को ग्रहण करती हुई साहित्य की तीव्र अनुभूति को प्रकट करने में, सहमत करने में होती है। भाषा विज्ञान- आधुनिक संचार साधनों के लिए भी अत्यंत उपयोगी होता है। क्योंकि भाषा विज्ञान के द्वारा ही उन ध्वनि संकेतों का निर्माण सुगमता एवं सरलता के साथ किया जा सकता है जिनका उपयोग दूरसंचार (टेलिकॉम) के लिए होता है। इतना ही नहीं पारिभाषिक शब्दावली एवं तकनीकी शब्दों का निर्माण में भी भाषा विज्ञान की उपयोगी सर्वोपरि है।

भेद होता है। और वे पर्यायवाची शब्द भी अलग-अलग अर्थ के वाचक होते हैं।
जैसे:- हकीम, वैद, डॉक्टर, कविराज आदि शब्द चिकित्सा के वाचक हैं। परन्तु इनमें परस्पर भेद होता है। ~~इसी~~ ऐसा ही स्कूल, मदरसा, पाठशाला, कॉलेज, विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय आदि शब्द शिक्षा संस्था के द्योतक हैं किंतु इनमें परस्पर अंतर होता है।

अतः भाषा विज्ञान शब्दार्थ परिवर्तन दिशाएं एवं उनकी कारणों को संपूर्ण बोध कराने के कारण अत्यंत उपयुक्त होता है।

उपयोगिता भाषा विज्ञान न केवल भाषाओं का अध्ययन में ही उपयोगी है बल्कि साहित्य के अध्ययन में भी अत्यंत उपयोगी होता है। क्योंकि साहित्य में प्रयुक्त विभिन्न भाषाओं का निर्माण एवं संरक्षण का संपूर्ण ज्ञान भाषा विज्ञान के द्वारा ही प्राप्त होता है और भाषा विज्ञान ही यह बताता है कि किस तरह कोई बोली धीरे-धीरे विभाषा का रूप ग्रहण करती है। कैसे वह लोक भाषा का रूप ग्रहण करते हुए साहित्य रचना एवं लोक व्यवहार में प्रयुक्त होता है। किस तरह प्रतिनिष्ठ भाषा बन कर उच्च-स्तरीय साहित्य की निर्माण में काम आने लगती है। भाषा विज्ञान ही साहित्य की अभिव्यक्ति संदर्भ एवं अभिव्यंजन कौशल को समझाने में सहायता पहुँचाता है। तथा भाषा विज्ञान से ही यह ज्ञात होता है कि किस प्रकार कोई भाषा विभिन्न शब्द रूपों को ग्रहण करती हुई साहित्य की तीव्र अनुभूति को प्रकट करने में सक्षम करने में होती है। भाषा विज्ञान- आधुनिक संचार साधनों के लिए भी अत्यंत उपयोगी होता है। क्योंकि भाषा विज्ञान के द्वारा ही उन ध्वनि संकेतों का निर्माण सुगमता एवं सरलता के साथ किया जा सकता है जिनका उपयोग दूरसंचार (टेलिकॉम) के लिए होता है। इतना ही नहीं पारिभाषिक शब्दावली एवं तकनीकी शब्दों का निर्माण में भी भाषा विज्ञान की उपयोगी सर्वोपरि है।